"गंगा"– भारतवर्ष की सर्वाधिक पवित्र एवं मोक्ष दायिनी नदी

पी.के.अग्रवाल एवं डॉ. शरद कुमार जैन
रा.ज.सं.,रूड़की

विश्व के तीन प्रमुख नदी तंत्रों सिन्धु, गंगा एवं ब्रह्मपुत्र का उद्गम एशिया की हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं से हुआ है। भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में सिन्धु एवं गंगा की वृहत्त एवं उपजाऊ मैदानी भू–भाग में ही प्राचीन सिन्धु घाटी की सभ्यता पाई गई है। गंगा नदी, जो भारतीय भू–भाग का लगभग एक तिहाई भाग आच्छादित करती है, भारत की एक महत्वपूर्ण एवं सर्वाधिक पवित्र नदी है। पौराणिक ग्रन्थों में इस महानतम नदी की अनेकों सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक किवदन्तियाँ पाई जाती हैं।

निःसंदेह गंगा, भारतवर्ष की एक सर्वाधिक पवित्र नदी है। वास्तव में गंगा आवाह क्षेत्र के निवासी इसे गंगा माँ या गंगा जी या माँ गंगे के नामों से पुकारते हैं। भारतवासी यह विश्वास करते हैं कि गंगा नदी के पवित्र जल में स्नान करने मात्र से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जनमानस का यह विश्वास है कि मृत्यु के समय प्राणी के मुख में गंगा जल की कुछ बूँदों को डालने से उसकी आत्मा मृत्युलोक से मुक्त होकर स्वर्गलोक में चली जाती है। मृत्यु के पश्चात् गंगा में अस्थियाँ प्रवाहित करने से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पुराणों में गंगा नदी को सर्वाधिक पवित्र नदी के रूप में स्वीकार किया गया है। "गंगा" शब्द को शुद्ध एवं पवित्र जल का पर्याय माना गया है। यही कारण है कि "गंगा" शब्द को मध्य एवं दक्षिण भारत की अनेकों अन्य नदियों के नामकरण से संबद्ध किया गया है। एक पौराणिक कथा के अनुसार ब्रह्मदेव ने विष्णु भगवान् के चरणों के पसीने को एकत्र कर गंगा नदी का उद्गम किया। त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश) के दो देवों के स्पर्श के कारण गंगा नदी अत्यधिक पवित्र हो गई। गंगा की अन्य पर्याय विष्णु नदी (विष्णुदेव के चरणों से उत्पन्न होने के कारण), मन्दाकिनी, देवनदी, सुरसरी, त्रिपथगा, जान्हवी, भागीरथी इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। महाभारत में यह किवदन्ती प्रचलित है कि जब भीष्म मृत्यु शैय्या पर थे तब अर्जुन अपने तीर से भूमि में छेद कर भू–जल को पृथ्वी पर लाए जिसे पाताल गंगा के रूप में जाना गया।

गंगा के बारे में ऋग्वेद में भी वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में वर्णित एक प्रसंग के अनुसार गंगा को पर्वतराज हिमालय की पुत्री बताया गया है। देवी भागवत् के अनुसार गंगा को भगवान् विष्णु की पत्नी कहा गया है। महाभारत मे गंगा को महाराज शान्तनु की पत्नी एवं भीष्म की माता के रूप में वर्णित किया गया है।

गंगा की उत्पत्ति के बारे में रामायण में वर्णित एक कथा के अनुसार राजा भागीरथ कपिल मुनि द्वारा श्रापित अपने साठ हजार पूर्वजों के उद्धार हेतु गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाये। भागीरथ द्वारा गंगा को पृथ्वी पर लाये जाने के कारण गंगा को भागीरथी के नाम से भी जाना जाता है।

गंगा को एक अन्य नाम जान्हवी से भी जाना जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार सदियों पूर्व जब गंगा का पृथ्वी पर उद्गम हुआ तो अपने तीव्र वेग के कारण गंगा ने खेतों में फसलों आदि को नष्ट कर दिया। गंगा ने जानू नामक एक संत के तप को भी बाधित किया। क्रोधित हो जानू ने गंगा के जल को पी लिया। इससे समस्त देवी देवता दुःखी हो गये तथा उन्होंने जानू से गंगा को मुक्त करने की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर जानू ने गंगा को अपने

कर्ण मार्ग से मुक्त कर दिया। इसी कारण गंगा को जानू की पुत्री जान्हवी के नाम से भी जाना जाता है।

गंगा नदी का कुल आवाह क्षेत्र चार देशों भारत, नेपाल, तिब्बत (चीन) एवं बंग्लादेश में स्थित है। गंगा की अनेकों सहायक नदियों का भौगोलिक क्षेत्र भारत में स्थित है तथा उनका उद्‌गम भारत एवं नेपाल में स्थित है। गंगा नदी की कुल लंबाई 2525 किलोमीटर है तथा यह एशिया की बीसवीं तथा विश्व की 41वीं सबसे लंबी नदी है।

गंगा का उद्‌गम समुद्र तट से 7010 मीटर की ऊँचाई पर हिमालय पर्वत श्रृंखला के अन्तर्गत भारतवर्ष के उत्तराखण्ड राज्य में गौमुख के निकट स्थित गंगोत्री हिमनद से होता है। यहाँ पर इस नदी को भागीरथी के नाम से जाना जाता है। उत्तराखण्ड से ही गंगा की एक अन्य सहायक नदी अलकनन्दा उद्‌गमित होती है। इन दोनों नदियों का संगम देवप्रयाग में होता है। जिसके पश्चात् इसे गंगा के नाम से जाना जाता है। देवप्रयाग में मिलने से पूर्व भागीरथी एवं अलकनन्दा नदियों में मिलने वाली अन्य नदियों में मन्दाकिनी, धौली गंगा एवं पिन्डार प्रमुख हैं।

गंगा नदी का कुल आवाह क्षेत्र 862,769 वर्ग कि.मी. है जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 26.2% है। यह क्षेत्र उत्तरी अक्षांश $22^0$30′ से $31^0$30′ एवं पूर्वी देशान्तर $73^0$30′ से $89^0$0′′ के मध्य फैला हुआ है।

गंगा नदी से प्राप्त जल निस्सरण 16,650 घन मी./से. है। फरक्का बैराज पर गंगा से प्राप्त औसत वार्षिक प्रवाह का मान $5.25X10^6$ लाख घन मी. है। ग्रीष्म ऋतु में हिमगलन के कारण गंगा एवं इसकी सहायक नदियों में अत्यधिक जल प्रवाह प्राप्त होता है।

भारतवर्ष में गंगा एवं इसकी सहायक नदियों से प्राप्त होने वाला सतही जल संसाधन संभाव्य का मान 525 बिलियन घन मी. है जिसमें से उपयोगी जल संसाधन का मान 525 बिलियन घन मी. है। गंगा बेसिन से प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 1471 घन मी./वर्ष है। यद्यपि गंगा से प्राप्त होने वाले जल की मात्रा प्रचुर है तथापि स्थानिक एवं कालिक दृष्टिकोण से इसका वितरण असमान होने के कारण गंगा बेसिन में समान समय पर बाढ़ एवं सूखे की समस्या पाई जाती है।

गंगा नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ टौन्स, यमुना, रामगंगा, घाघरा, गन्डक, महानन्दा, पुन–पुन, किउल, बूढ़ी गन्डक, सोन इत्यादि हैं। भारतवर्ष में गंगा नदी से प्राप्त जल के संचयन की संभाव्यता $8.446X10^4$ मिलियन घन मी. आंकलित की गई है। वर्ष 1995 तक $3.68X10^4$ मिलियन घन मी. जल संचयन के लिए जल संसाधन योजनाएं निर्मित हो सकी हैं। $1.706X10^4$ मिलियन घन मी. जल संचयन के लिए जल संसाधन योजनाओं के निमार्ण कार्य प्रगति पर हैं।

गंगा बेसिन से प्राप्त जल विद्युत संभाव्यता 10,715 मेगावॉट है। कुल चयनित जल विद्युत परियोजनाओं में 22 योजनाएं प्रचालन में हैं तथा 12 योजनाओं का निर्माण कार्य प्रगति पर है। गंगा नदी पर निर्मित प्रमुख जल संसाधन परियोजनाओं में गंगा नहर तंत्र, यमुना नहर तंत्र, टिहरी बाँध परियोजना, लखवाड़ बाँध, रामगंगा परियोजना, रिहन्द बाँध, राजघाट बाँध, हलाली बाँध इत्यादि प्रमुख हैं।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि गंगा भारतवर्ष की एक प्रमुख एवं पवित्र नदी है। गंगा के जल को शुद्धता का प्रतीक माना जाता है। परंतु मानवीय गतिविधियों, औद्योगिक एवं घरेलू सीवेज प्रवाह एवं अन्य अशुद्धियों के कारण गंगा का जल गंदा हो गया है। कानपुर जैसे विशाल औद्योगिक नगर में यदि गंगा जल को देखा जाए तो यह एक गंदे नाले के जल के समान प्रतीत

होता है। शासन द्वारा गंगा जल को शुद्ध करने हेतु किये जाने वाले अथक प्रयासों एवं योजनाओं जैसे गंगा एक्शन योजना, यमुना एक्शन योजना इत्यादि के बाद भी हम इसे शुद्ध करने में सफल नहीं हो सके हैं। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह गंगा के जल को शुद्ध करने में अपना योगदन दे। औद्योगिक एवं घरेलू सीवेज को गंगा में प्रवाहित करने से पूर्व इसका उपचार किये जाने की आवश्यकता है। गंगा के जल के समुचित उपयोग एवं इसे शुद्ध बनाये रखने से हमारा यह प्राकृतिक जल संसाधन देश के सर्वांगीण विकास में अपना पूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है।

देवनागरी लिपि में उसकी ऐतिहासिक महत्ता के अतिरिक्त और भी विशेष गुण हैं।

सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या